आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received:15/09/2024; Accepted:18/09/2024; Published:26/09/2024

'सरहद के इस पार' कहानी में सामाजिक सद्भाव का संदेश

प्रो.डॉ. पी .एम.भुमरे
विभागाध्यक्ष,हिंदी विभाग,
एस.एम. बी. पी.के महाविद्यालय,शंकरनगर
तह- बिलोली,जि.- नांदेड
भ्रमणध्वनि - 9881641369
Email-bhumare1984@Gmail.com

प्रो.डॉ. पी .एम.भुमरे,**'सरहद के इस पार' कहानी में सामाजिक सद्भाव का संदेश** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024, (211-217)

शोधसार - ' सरहद के इस पार ' यह कहानी साम्प्रदायिक, धार्मिक संकीर्ण सोच से बाहर निकाल कर धर्म तथा संस्कृति के उदार जीवन मूल्यों से परिचित कराती है। आए दिन समाज में जाति तथा धर्म के नाम पर शान्ति भंग करने वाली प्रवृत्तियाँ खोजकर भाइचारे का संदेश भी है। यह कहानी विभाजन के नाम पर कब तक हिन्दू-मुस्लिमों में दंगे फसाद होते रहेंगे ऐसे संवेदनशील विषयों पर चिंतन करने के लिए तथा सोचने के लिए मजबूर करती हैं।कहानी का पात्र रेहान मुसलमान है जिसमें निःस्वार्थ प्रेम भाव, अपने देश, समाज और धर्म के प्रति समर्पित त्याग की भावना अभिव्यक्त हुई है।

बीज़ शब्द - सरहद पार, हिन्दू -मुस्लिम,सामाजिक एकता, प्रेम का आदर्श रूप, विभाजन का दर्द, जाति-बिरादरी, अन्याय।

प्रस्तावना -

नासिरा शर्मा एक संवेदनशील साहित्यकार है । समाज और धर्म के क्षेत्र में सुधारक हुए उन्होंने जो कार्य किया है उससे समाज और देश का भला हुआ है । ऐसे चरित्रों के निर्माण से ही देश की एकात्मता और बंधुत्व की भावना में वृद्धि होती रही है । विभाजन ,बँटवारा किसी भी समाज को क्षतिग्रस्त करता है ।परंतु

मानव मूल्य आज भी ज़िन्दा हैं। चंद्रकांत देवताले कहते हैं कि, "आज साहित्य की केंद्रीय चिंता मनुष्य है ।आदमी से जुड़े होने के कारण साहित्य में निरंतर छटपटाहट है ।मनुष्य के सपनों का सीमाहीन जंगल कभी शून्य नहीं हो सकता"।1 सामाजिक, धार्मिक उन्माद की स्थितियां न बने इस प्रकार के संतुलित और समन्वय की विचारधारा को स्वीकार करना होगा। इसी प्रकार का संदेश सरहद के इस पार कहानी के पात्र देते हैं । जो सामाजिक ,धार्मिक और सांस्कृतिक एकत्व की भावना में वृद्धि आवश्यक है। साथ ही सामाजिक एकात्मता का प्रतिपादन कहानी के पात्र करते हैं ।

सरहद के इस पार कहानी की लेखिका नासिरा शर्मा है जो प्रस्तुत कहानी से विभाजन के दंश, पीड़ा की अभिव्यक्ति करती है । प्रस्तुत कहानी में रेहान नाम का नायक है जो सुरैया से प्रेम करता है । सुरैया भी अपना दिल रिहान को दे बैठती है और जीवन के सुनहरे सपनों का ताना-बाना बून लेती है। रेहान प्रथम मुलाकात में ही सुरैया के प्रति आकर्षित हो जाता है परंतु देश ,धर्म और जाति विरोधी ताकतों के कारण रेहान के ह्रदय में सुरैया के प्रति नफरत उत्पन्न होती है। परंतु उनके प्रेम में सच्ची भावना है, आकर्षण नहीं है । बल्कि निस्वार्थ प्रेम वही होता है जिससे किसी प्रकार की अपेक्षा नही होती । गांव में कर्फ्यू लगा हुआ था तब तनाव भरी परिस्थितियाँ थी, ऐसे में भी दो बदमाश लड़के एक हिंदू लड़की को भगाकर ले आए थे । जैसे ही लड़की मदद की याचना करती है वैसे ही रेहान दौड़ते जाकर उस लड़की की सहायता करते हैं। इतना ही नहीं रेहान हिंदू लड़की को उसके घर तक पहुंचाने में सहायता करते हैं । वह लड़की हिंदू थी फिर भी रेहान के मन में किसी भी प्रकार की घृणा या नफरत पैदा नहीं होती । वे दोनों लडके मुस्लिम थे, फिर भी रेहान दोनों ल़डको के चंगुल से लडकी को आजाद करते हैं। उन दो लड़कों में रेहान के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो हो जाता है । ऐसी स्थिति में रेहान उन दोनों लड़कों को रोककर बुरा काम न करने की सलाह देते हैं। जब वह दोनों लड़के हाथापाई पर आते हैं तो एक हिंदू लड़की की इज्जत बचाने हेतु रेहान उन्हें पीटते भी हैं। उन दोनों लड़कों को पीटते हुए रेहान कहता है कि, "मेरे जीते जी इस मोहल्ले में किरपी जालिम औरंगजेब की पैदाइश नहीं हो सकती । तारीख दोबारा मेरे सामने नहीं दोहराई जाएगी वरना।"1 सच्चे इंसान की तरह रेहान का आचरण है। मनुष्य वही श्रेष्ठ होता है, जो अन्याय, अत्याचार का विरोध करता है । वह किसी भी जातीय धर्म का क्यों न हो । अच्छे और बुरे व्यक्ति सभी जाति धर्मो में पाए जाते हैं । इस दृष्टि से रेहान अपने पर हुए अन्याय का बदला अन्याय से नहीं बल्कि उदार वृत्ति का परिचय देते हैं। इतना ही नहीं रेहान डरपोक या कायर भी नहीं है वह सच्चाई का सामना डटकर करता है। परंतु यही बात उसके बहन नरगिस को खटकती है। क्योंकि रेहान सुरैया से प्रेम करते है। रेहान सुरैया को भगाकर भी ले जा सकते थे परंतु रेहान को सुरैया के परिवार की बदनामी का डर लगता है। सुरैया के परिवार की बदनामी ना हो इस प्रकार के सामाजिक भय से वे सुरैया को भगाकर नहीं ले जाते । जबकि रेहान निडर और साहसी है। जबकि रेहान अन्याय, अत्याचार कहीं पर भी होता है और उसे वे देखते है तो वे अन्याय और अत्याचार को बर्दाश्त नहीं कर पाते। रेहान अपनी अम्मा से कहते हैं कि, "अम्मा ज़ुल्म सहनेवाला जालिम के हाथ और मजबूत करता है ।"2 यह बात नरगिस जब भी याद करती है तो रेहान

भाई उसे डरपोक लगते हैं परंतु यह भी सच्चाई है कि, प्रियकर अपनी प्रेयसी की बदनामी ना हो उसका ध्यान भी रखते हैं। रेहान ने जो किया है, उसके आचरण से यही सिद्ध होता है कि, वह सुरैया तथा उनके परिवार की तनिक भी बदनामी नहीं चाहते हैं । उसी के कारण वे परिवार के विरुद्ध आचरण नहीं करते हैं । देश विरोधी ताकते हर काल, परिस्थितियों में उपस्थित रहती है जिसके कारण सभी मानव जातियां में आपसी भाईचारे की भावना टूट जाती है । कोई भी धर्म आपसी बैर रखने की सीख नहीं देता है। फिर भी कई सदियों से धार्मिक,जातीय द्वेष की भावना उपस्थित रही है ।आज जिससे हमे पथप्रदर्शन होता है वह साहित्य है।परन्तु पिछले कुछ वर्षों से साहित्य में भी विभिन्न विचारो के गुट बन चुके है। वे अपने संकीर्ण प्रवृत्ति का विचार साहित्य के माध्यम से थोपते है।साथ ही ऐसा साहित्य किसी भी प्रकार का नया ज्ञान देने में समर्थ नहीं है। रेहान द्वारा संकीर्ण साहित्य का विरोध किया है।जैसे, " जो शायर दिलों को काटने की बात करते है, इन्सानी रिश्तों को तोड़ने की बात करते हैं उनका अदब कोयला है जिसे छू कर हाथ काले हो जाते हैं।और दिमाग तारिक "3। सामाजिक ,धार्मिक स्तर पर जो असंतोष की स्थितियां जब-जब उत्पन्न हुई है उसके परिणाम से मानव संस्कृति तहस-नहस हो चुकी है। साथ ही मूल्य- परंपराएं खंडित हो चुकी हैं । मानव में कई प्रकार की सहजात प्रवृत्तियां होती है । जब यह प्रवृत्तियां संकीर्ण रूप लेकर प्रदर्शित होती है तब मानव समाज की सभ्यता टूटने में देर नहीं लगती है । मानव समाज का इतिहास देखें तो कितनी सभ्यताएं, संस्कृतियाँ काल के गर्त में दमन हो चुकी है। अन्यायी एवं क्रूर शासको की प्रवृत्तियों के कारण सामाजिक एकता की भावना सम्भव नहीं हो पायी है। कहानी का नायक रेहान नफरत को त्यागने का संदेश देते हैं। वह अपने करनी और कथनी से सामाजिक सद्भाव का संदेश देते हैं जो सबके लिए एक पथ प्रदर्शक के रूप में सिद्धहस्त होता है।

भारत की संस्कृति एवं आचरण का एक आदर्श रहा है जिसके परिणाम सदियों से एक विशाल भूमि पर विभिन्न जाति धर्मों के लोग निवास करते आए है । कई सभ्यताओं और संस्कृतियों का योगदान रहा हैं। जो हमे सभी जाति धर्मों के लोगों को एक साथ रहने का संदेश देती हैं। सभी धर्म और जाति के लोग एक साथ जीवन बिताते रहे हैं । परंतु काल के दुष्टचक्र से धर्म और जातियों की मानसिक संकीर्ण वृत्ति का उदय हुआ परिणामस्वरूप देश का बंटवारा हुआ तब से हिंदू मुसलमानों में नफरत की भावना उत्पन्न हो गई है ।यह नफरत की ज्वाला प्रेम और भाईचारे में बदलने हेतु सद्भाव की आवश्यकता थी। यही सद्भाव का विचार लेकर रेहान बदले की भावना का त्याग करते है । अपने जाति के दुष्ट ,बुरे वृत्ति के लड़कों का विरोध करके एक हिंदू लड़की की इज्जत बचाने का काम करते है। व्यक्ति को अपने धर्म के प्रति प्रेम होना कोई बुरी बात नहीं है। परंतु दूसरों के धर्म के प्रति द्वेष भी नहीं होना चाहिए। इसी प्रकार का संदेश रेहान के माध्यम से प्रदर्शित होता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि, हिंदू- मुस्लिम एकता तभी संभव है जब एक- दूसरे के प्रति विश्वास, सम्मान का भाव हो। जिस रिश्ते में सम्मान की भावना होती है वही रिश्ता श्रेष्ठ माना जाता है। वर्तमान युगीन रिश्तों में स्वार्थ, नकली भावों का प्रदर्शन हो रहा है । साथ ही दिखावे की प्रवृत्ति ने अधिक उग्र रूप धारण कर लिया है। जिसके कारण आए दिन रिश्ते टूट जाते हैं। केवल खून का रिश्ता पवित्र होता है यह

भी एक गलत धारणा सिद्ध हो रही है । जिस प्रेम में त्याग, समर्पण औऱ विश्वास होता है वह किसी भी धर्म, जाति का हो श्रेष्ठ ही माना जाता है । अक्सर यह भी देखने को मिलता है कि, खून के रिश्तों में ही गंदी हरकतें, नीच प्रवृत्तियां प्रदर्शित होती है । वह रिश्ते को बदनाम करते हैं। ऐसे रिश्ते व्यक्ति और समाज को विघटन की और ले जाते हैं । परंतु हमें उन उदार मूल्यों को अवश्य ध्यान में रखते हुए आचरण करना चाहिए जो इस कहानी के पात्र ने अपने विचार एवं कृति से सिद्ध किया है। हमारे मूल्यों और संस्कृति के विघटन के लिए हम ही जिम्मेदार होते है। जहां कहीं पर भी भ्रष्ट और विकृत वृत्ति विद्यमान है उसका डटकर विरोध करना चाहिए । जो सच है उसी को सत्य के रूप में स्वीकारना आवश्यक होना चाहिए । कहानी के पात्र रेहान ने अपने लोगों के अन्याय और अत्याचार का खुलकर विरोध किया है। साथ ही जो अच्छा है उसका सम्मान भी किया है । जैसे "अजीब - अजीब उन्हें शौक हुए हैं ,कुछ दिन पहले रामखेलावन के घर से हाथ में राखी बंधवाए, माथे पर टीका लगवाए निकल रहे थे।"4 रेहान एक मुसलमान होकर भी हिंदू रीति- रिवाज तथा त्योहारों को मनाने का समर्थन करते हैं । जैसे कि, भाई-बहन के रिश्ते को दर्शानेवाला राखी दूज त्यौहार मनाते हैं । रेहान हिंदू परिवार की लड़की के हाथों राखी बंधवा कर लेते हैं । उनकी धारणा है कि, केवल राखी बांधने से ही भाई-बहन का प्रेम नहीं बढ़ेगा बल्कि इसके लिए बहन पर कोई भी आंच ना आए, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है। कहा जाता है कि, अच्छा करने वाले इंसान की उम्र अधिक नहीं होती है । अधिक उम्र के लिए नहीं परन्तु हमारे हाथों अच्छे कामों को पूरा करने हेतु जीना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। अच्छे लोगों के दुश्मन भी अपने ही होते हैं। रेहान एक अच्छे जीवन जीने की कोशिश करता है,परंतु रेहान का इस प्रकार का आचरण उनके ही लोगों को ठीक नहीं लगता है। आपसी नफरत की जो आग लगी हुई है उसे मिटाकर प्रेम का रास्ता ही रेहान के अंत का कारण बनता है। बुरे काम करने वालों में रेहान नहीं है जो भी है उसके आचरण में शुद्धता है। सामाजिक सद्भाव एवं शांति स्थापित करने वालों के विरुद्ध अत्याचारी क्रोधित होते हैं । उन्हें भय सताता है कि, सामाजिक एकता और शांति स्थापित हो गई तो उनका महत्व कम हो जाएगा । कुछ धार्मिक कट्टर संकीर्ण मानसिक वृत्ति के लोग रेहान जैसे ईमानदार ,त्यागी युवक को जीने नहीं देते हैं । ऐसे अत्याचारियों पर पाबंदी लाने के लिए रेहान के जैसे देशभक्त युवकों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से रेहान एक सच्चा मुसलमान है। एक सच्चे मुसलमान का उत्तरदायित्व यह भी है कि ,जो सच है उसे स्वीकार किया जाए। दुष्ट ,दुर्जन अन्यायी और अत्याचारियों के खिलाफ आवाज उठाना रेहान की विशेषता है।साथ ही अन्याय और अत्याचार का मुकाबला करते है । साथ ही अपने शक्ति से किसी को भी दबाना नहीं चाहते है। सबकी स्वतंत्र वृत्ति का पुरस्कार करते है। जो आज के युवाओं को रेहान का चरित्र आदर्शवत है। समाज का भला हो ऐसे चाहने वाले लोग कम होते हैं । साथ ही उन्हें किसी का साथ भी नहीं मिलता है। समाज में दुष्ट वृत्ति को समुल जड़ से मिटाना है तो नफरत से ही संभव नहीं होगा । एक दूसरे की भावनाओं के सम्मान से ही भाईचारे की भावना में वृद्धि होगी।

किसी भी व्यक्ति का जन्म जहां पर होता है उस व्यक्ति को अपने मातृभूमि पर प्रेम होता है । जिस परिवेश में व्यक्ति पला और बड़ा होता है उसे बनाने में जन्मभूमि का योगदान बड़ा होता है। रेहान जन्मभूमि के प्रति अपना ऋण चुकाना उत्तरदायित्व समझते है। रेहान एक सच्चा मुसलमान है, जिसका जन्म भारत में हुआ

है और भारत की भूमि के प्रति वे अपना कर्तव्य निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। वतन के प्रति वफादार रहते हुए मिट्टी के लिए ही मर मिटता चाहता है। रेहान जिस मुस्लिम परिवार से आता है उनके पूर्वजों ने भी देश के लिए अपना योगदान दिया है। रेहान बुरा व्यक्ति नहीं है बल्कि उसके खानदानी परंपरा में देशभक्तों की परंपरा रही हैं। रेहान को जब हिन्दू-मुस्लिम के फसाद के समय ग़द्दार, देश विरोधी कहकर अपमानित किया जाता है। तो इस पर रेहान रोष व्यक्त करते हुए देशभक्ति का सबूत देता है। जैसे- " सबूत चाहिए तो जाकर देखो हमारे कब्रिस्तान, सबके सब मौजूद हैं वहाँ, खुद ग़द्दार है हम पर इल्ज़ाम लगाते हैं। मारो सब कातिलों को।मारो खून की नदियाँ बहा दो मार - मारकर ।"5 इतना ही नहीं रेहान के रग- रग में भी देशप्रेम की भावना भरी हुई है। अपने वतन पर मर- मिटना भी चाहते है। इसीलिए तो देश, समाज और धर्म के ठेकेदारों को निर्भय होकर कहते हैं कि, " मारो कातिलों को, मारो मेरे कातिल को। यह मेरा वतन है "6 । रेहान की ह्रदय से इच्छा है कि, अपने वतन में शांति,भाईचारे की स्थापना हो। सभी जाति - धर्म के लोग मिल-जुलकर रहे। वे आपसी भाईचारे को बढ़ाना चाहते हैं । पूर्वजों ने जो हिंदू- मुसलमानों में नफरत की आग लगाई है, उसे ज़ड से मिटाना चाहते हैं और भाईचारे की स्थापना पर जोर देते हैं । एक हिन्दू लड़की को किसी गैर लोगों द्वारा छेड़े जाने पर उस लड़की की रक्षा करते हैं। साथ ही उस लड़की को सकुशल परिवार के पास लौटाते हैं साथ ही अपने धर्म ,जाति पर आंच ना आए इस प्रकार का रेहान का आचरण होता है। रेहान की हत्या के संदर्भ में अत्याचारी, विघटनकारी प्रवृत्तियाँ समाज में हावी रहती है। उसका समय पर ही दमन करना चाहिए जिससे समाज की प्रगति होगी अन्यथा कई लोगों को उसका नुकसान उठाना पड़ता है। विघटनकारी ,क्षुद्र मनोवृत्ति का व्यक्ति किसी का भी भला नहीं चाहता। जैसे, "मूल्य के सर्वमान्य ढांचे को अस्वीकार कर व्यक्ति समाज में रहते हुए भी समाज का नहीं हो पाता या तो समाज उसे स्वीकार नहीं करता अथवा वह अपने आप को समाज का अंग नहीं बन पाता "।7 अपने जाति , धर्म से सभी को प्रेम होता है सभी धर्म के संस्थापकों ने यही उपदेश किया है कि, मानव जीवन का आदर्श प्रेम ही है। जो जातिगत भेदभाव करता है वह मनुष्य नहीं पशु के समान होता है । परंतु दुर्भाग्य की बात है कि ,इतने वर्षों के बाद भी मनुष्य में जो जाति और धर्म की जो व्यवस्था है वह और भी मजबूत हो रही है । जिसमें मनुष्य जाति का हित नहीं है । जाति और धर्म की कट्टर वृत्ति से मानव के मूल्य, संस्कृति का विघटन होता रहा है । एक - दूसरे की सांस्कृतिक आदान-प्रदान से ही मानव समाज में मूल्य और परंपराओं की वृद्धि हो सकती है । जिससे मनुष्य का जीवन आसान हो जाएगा। इसी प्रकार का दृष्टिकोण रेहान के व्यक्तित्व में प्रदर्शित होता है ।हमारी सामाजिक सहिष्णुता की वृत्ति कई सदियों से चली आ रही है। गांव हो या शहर में एक दूसरे की सहायता करते हैं। साथ ही सुख-दुख में एक दूसरे के साथी होते हैं । इसी के कारण हिंदू परिवार और मुस्लिम परिवार सदियों से गांवों तथा शहरो में मिलजुलकर रहने की परंपराएं प्रचलित रही है। उनमें किसी भी प्रकार का ईर्षा, द्वेष मूलक भावना नहीं है। कठिन प्रसंगों में एक दूसरे की सहायता करने की विशेषता भी रही है। सांप्रदायिक दंगे और जातियों के झगड़ों का मूल कारण अंग्रेजों की देन है । उनकी जातिगत भेदभाव की प्रवृत्तियों के कारण ही देश का बंटवारा हुआ। परिणामस्वरूप कई वर्षों तक हिन्दू-मुस्लिमों के फसाद होते रहे । कहानी का नायक इसे भलीभांति जानता है। इसी लिए तो आपसे भाइचारे का,

समता का पुरस्कार करता है। जैसे , "अंग्रेजों ने हमें फंसाद की शक्ल में पाकिस्तान तोहफे में दिया है और हम इस जख्मों को जब तक जिएंगे, पालते रहेंगे और कर भी क्या?"8 रेहान अपने आचरण एवं कृति से सर्वधर्म समभाव के प्रति समन्वित दृष्टिकोण रखते हैं जिससे मानव समाज में एकता, बंधुत्व और अपनेपन की भावना में वृद्धि हो जाती है । इस कहानी के नायक अपने आचरण एवं कृति से यह करके दिखाते हैं कि, आपसी प्रेम को बढ़ाने के लिए हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए।जो घृणा, नफरत फैली है , उसे प्रेम से, बंधुत्व की भावना से ही ज़ड से मिटा सकते हैं ।

सारांश-

सरहद के इस पार यह कहानी विभाजन का जो दंश है उसी का जीता जागता दस्तावेज है। प्रस्तुत कहानी का पात्र रेहान जो सच्चे दिल से सुरैया से प्रेम करता है परंतु जैसे ही सुरैया का विवाह दूसरे देश के व्यक्ति के साथ हो जाता है तब सच्चा प्रेम हार जाता है । परंतु रेहान को इसमें अपनी हार दिखाई नहीं देती। हार की जगह वह प्रेम का ही प्रसार करना चाहता है। रेहान अपने प्रेम को पाने के लिए किसी भी हरकत को अंजाम दे सकता था परंतु रेहान पर परिवार के संस्कार है। किसी को भी अपने कारण अपमान का जीवन जीना ना पड़े। हालांकि रेहान को अन्याय के प्रती चिढ है जिस पर अन्याय होता है उसका साथ देते हैं और उसके पक्ष में न्याय के साथ खड़े रहते हैं। रेहान एक सच्चे मुसलमान का दायित्व निभाते हैं जो उसके दोस्तों के द्वारा हिंदू लड़की की रक्षा करते समय भी डरता नहीं है । जब-जब देश विरोधी ताकते सिर उठाती है तब -तब रेहान डटकर विरोध करता है। तात्पर्य लेखिका ने इस कहानी में हिंदू- मुस्लिम की एकता प्रतिपादित करते हुए रेहान के चरित्र से प्रेम, समर्पण,भाईचारा और संस्कृति की रक्षा जैसे मूल्यों की अभिव्यक्ति की है । जो जाति, धर्म के आधार पर सामाजिक एंव धार्मिक वातावरण कलुषित करने पर तुले हुए हैं। उनके लिए एक सबक है।

संदर्भ सूची-

1. समकालीन भारतीय साहित्य में आधुनिक युगबोध पृष्ठ-48 डॉ. सुशील धर्मानी, डॉ. रेनू हिंगोरानी

2. हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 10

3.हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 15

4. सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर भाग 3 - रॉबर्ट के मटन मटन पृष्ठ - 159

5.हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 18

6.हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 20

7.हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 21

8.हिंदी समय में नासिरा शर्मा की रचनाएं - सरहद के इस पार - नासिरा शर्मा पृष्ठ - 25

****